तिर्यंच गति कारण–निवारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवों के कर्म के अनुसार गतियां प्राप्त होती हैं। कर्म बिना फल दिये नष्ट नहीं होता। कर्म का परिणाम सभी प्राणियों को भोगना पड़ता है। कर्म ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मनुष्य बिना कर्म किये एक पल भी नहीं रह सकता। शयनकाल में भी मानसिक कर्म करता रहता है। एक जन्म का कार्य दूसरे जन्म में करण बन जाता है। कार्य कारण की श्रृंखला चलती रहती है। जो जीव बुरा कर्म करते हैं उन्हें तिर्यंच गति प्राप्त होती है। तिर्यंच गति में पशु–पक्षी, पेड़–पौधे या प्राकृतिक जीव होते हैं।

गति का अर्थ है उत्पति स्थान देव और मनुष्य को श्रेष्ठ और नारक तथा तिर्यंच गति को गर्हित माना गया है। इन चार मुख्य गतियों के अनेक भेद–प्रभेद हैं। जीव मरकर इन गतियों में क्यों उत्पन्न होता है? क्या एक गति का जीव बार–बार उसी गति में जन्म लेता है या मरता है या उसका उत्क्रमण या अपक्रमण भी होता है। यदि उत्क्रमण या अपक्रमण होता है तो उसका कारण क्या है।

कारण की मीमांसा से स्पष्ट होता है कि इन गतियों में जीवों की उत्पति का एक प्रमुख घटक है–लेश्या। मनुष्य जीवन में जो अत्यन्त क्लिष्ट कर्म करता है वह अशुभ अध्यवसाय और लेश्या परिणामों के कारण मरकर नरक गति में उत्पन्न होता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव अपने जीवनकाल में अत्यन्त क्रूर अध्यवसायों, अशुभ लेश्याओं के वशीभूत होकर अत्यन्त क्लिष्ट कर्म उपार्जित करते हैं और वे कर्म उन्हें जीव योनियों में भ्रमण कराते हैं। लेश्याऐं भावों की नियामक हैं। लेश्याएं छः प्रकर की हैं। लेश्याओं की यह नियामकता नहीं है कि अमुक लेश्या वाला इन चार गतियों में से अमुक गति में ही जाएगा, क्योंकि मनुष्य में छहों लेश्याएं होती हैं और चारों गतियों में से किसी एक गति का आयुष्य बंध भी करता है। इससे यह स्पष्ट है कि लेश्याओं की गतियों के साथ पूर्ण नियामकता न होने पर भी लेश्या स्थानों की असंख्यता के कारण कुछेक लेश्या स्थान अवश्य नियामक बनते हैं।

कृष्ण लेश्या नरक का ही कारण है, यह बात नहीं है, किन्तु कृष्ण लेश्या का क्लिष्टतम परिणाम नरक का ही कारण बनेगा। असंज्ञी मनुष्य चार प्रकार के हैं– नैरयिक असंज्ञी आयुष्य, तिर्यंच योनिक असंज्ञी आयुष्य, मनुष्य योनिक असंज्ञी आयुष्य और देव असंज्ञी आयुष्य। जो असंज्ञी नकर में जाते हैं वे रत्नप्रभा नरक में उत्पन्न होने पर भी तीव्र क्लिष्टतम लेश्या के अभाव में ऐसे नरक वासों में उत्पन्न होते हैं जहां वेदना तीव्र नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि लेश्याएं गति निर्धारण का मुख्य घटक हैं।

कौनसा जीव बुरा कर्म करने पर तिर्यंच योनि में जन्म लेता है और किस कर्म के कारण उसको यह योनि प्राप्त होती है, उसका विवरण यहां द्रष्टव्य है। झूठा मापतोल करना, कपट धोखाधड़ी करने वाले, माया–मृषा करने वाले तिर्यंच गति में पैदा होते हैं। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव तिर्यंच गति वाले होते हैं। तिर्यंच का आयुष्य काल अधिक लम्बा नहीं होता। इन जीवों को सर्दी, गर्मी सहन करनी पड़ती है।

मनुष्य गति सबसे अच्छी गति है। बहुत पुण्य कर्मों के परिणामस्वरूप जीव मनुष्य योनि में जन्म लेता है। मनुष्य गति के अन्दर के जीव पांचइन्द्रियों वाले होते हैं। मानव के पास बुद्धि और विवेक होता है। बुद्धि और विवेक के द्वारा उसे सत्कर्म करना चाहिए। सत्कर्म, धर्म, ध्यान, जप, तप आदि के द्वारा मानव योनि प्राप्त होती है। मानव शरीर धर्म करने का साधन है। धर्म के अतिरिक्त सभी कर्म आत्मा के लिए बंधन होते हैं। जो जीव शरीर और आत्मा को पृथक् समझता है वही ज्ञानी होता है। भगवान् महावीर ने तटस्थ भाव से आत्मा और शरीर को देखा। वे केवल ज्ञानी थे। सरागसंयम, संयमासंयम, बालतपःकर्म, अकामनिर्जरा देवायुष्य कार्मण शरीर प्रायोग्य बंध बताया गया है। कर्मबंधन का मूल कारण इच्छाएं या कामनाएं है। इच्छा ही मानव के सुख का प्रमुख स्रोत है।

मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है। धर्मध्यान करना सबके प्रति प्रमोद भावना रखना अपने समान अन्य जीवों को समझने वाला, सदाचार करने वाला मानव योनि में

जन्म लेता है। कर्मशास्त्र का यह सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी अर्थात् मनुष्य जैसा करता है वैसा ही उसके साथ होता है।

सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं। ये प्राणी वहीं स्थिति और वृद्ध को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं और शरीर में वृद्ध को प्राप्त करते हैं और शरीर का आहार ग्रहण करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म ही उनकी उत्पत्ति, स्थिति और गति आदि का कारण है। वे कर्म के प्रभाव से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। प्राणियों की उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है। उनकी एक करोड़ सतानवें लाख पचास हजार जातियां हैं। एक योनि में अनेक जातियां होती है। तिर्यंच योनि के जीव कुटिल कर्म के कारण जीव योनियों में भटकते रहते हैं। तिर्यंच योनि में पेड़–पौधे, कीड़े–मकोड़े आदि जीव आते हैं। इनमें केवल स्पर्श होता है। ये एकेन्द्रिय जीव हैं। इन जीवों में केवल स्पर्श गुण होता है।